उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा– मार्च, 2008
अंक–योजना हिन्दी (ऐच्छिक)
कूटबंध 29/1/1
29/1/2
29/1/3

कक्षा : **XII**

सामान्य निर्देश :

1. अंक–योजना का उद्‌देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक योजना में दिए गए उत्तर–बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न किंतु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएं।
2. मूल्यांकन करने वाले परीक्षकों के साथ जब तक प्रथम दिन वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से अंक–योजना पर भली–भाँति आद्योपांत विचार–विनिमय नहीं हो जाता, तब तक मूल्यांकन आरंभ न कराया जाए।
3. मूल्यांकन अपनी निजी व्याख्या के अनुसार न करके अंक–योजना के निर्देशानुसार ही किया जाए।
4 प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दाईं ओर अंक दिए जाएं। बाद में उपभागों के इन अंकों का योग बाईं ओर के हाशिए में लिख कर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
5. **यदि प्रश्न का कोई उपभाग नहीं है तो उस पर बाईं ओर ही अंक देकर उन्हें गोलाकृत कर दिया जाए।**
6 **यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का अतिरिक्त उत्तर भी लिख दिया है तो अपेक्षाकृतअच्छे उत्तर पर अंक देकर दूसरे अतिरिक्त उत्तर को काट दिया जाए।**
7. **संक्षिप्त, किन्तु उपयुक्त विवेचन के साथ प्रस्तुत किया गया बिंदुवत उत्तर विस्तृत विवेचन की अपेक्षा अच्छा माना जाएगा। ऐसे उत्तरों को उचित महत्व देने की उपेक्षा है।**
8. **बार–बार की गई एक ही प्रकार की अशुद्ध वर्तनी पर अंक न काटें।**
9. अपठित गद्यांश और काव्यांश के प्रश्नों में परीक्षार्थियों की समझ, बोध क्षमता और ग्रहणशीलता का परीक्षण किया जाता है, अतएव इनके उत्तरों में अभिव्यक्तिगत योग्यता को अधिक महत्त्व न दिया जाए जिससे परीक्षार्थियों को अकारण हानि हो।
10. मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने – 0 से 100 का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात् परीक्षार्थियों ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे शत–प्रतिशत अंक दिए जाएं।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा – मार्च, 2008
अंक योजना हिन्दी (ऐच्छिक)
कूटबंध सं0 29/1/1
29/1/2
29/1/3

कक्षा **XII**

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| 1 | 1(क) | 2(क) | 1(क) | 'अपेक्षा' का अर्थ है चाहत, जगत से कुछ पाने की आशा रखना। 'उपेक्षा – उदासीनता यानी संसार से कुछ न चाहना अपितु निष्काम भाव से सबकी सेवा करना। | 2 अंक |
| | (ख) | (ख) | (ख) | 'कामना' का अर्थ है 'चाहत' – किसी से मान –सम्मान, धन–संपत्ति, सेवा आदि की आशा करना – जब यह आशा पूरी नहीं होती तो दुख होता है। | 2 अंक |
| | (ग) | (ग) | (ग) | अपेक्षाएं पूर्ण होने पर अहम् की तुष्टि होती है, जिससे मन को सुख मिलता है और उपेक्षा होने पर दुख की अनुभूति होती है, जिससे मन को असंतोष और अशांति मिलती है। | 2 अंक |
| | (घ) | (घ) | (घ) | मनुष्य स्वभाववश संस्कारों से प्रेरित हो अपना स्वाभाविक कर्म करता है। अतः उसे सफल–असफल होने पर सुख–दुख की अनुभूति नही होनी चाहिए। यही गीता का अमर संदेश है। | 2 अंक |
| | (ड.) | (ड.) | (ड.) | शीर्षक<br>(1) निष्काम कर्म श्रेष्ठ है।<br>(2) कामना–अशांति का कारण।<br>(या कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक दिए जाने पर अंक दिए जाएं।) | 2 अंक |

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

परीक्षा – मार्च, 2008

अंक योजना हिन्दी (ऐच्छिक)

कूटबंध सं0 29/1/1
29/1/2
29/1/3



कक्षा **XII**

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/ 1/2 | 29/ 1/3 | | |
| 2 | 2(क) | 1(क) | 2 का अथवा | 'वैराग्य छोड़ ...... ................ आग सहोरे।' देश की रक्षा हेतु देशवासियों में वीरता और साहस का भाव भरने, अहिंसा और तपस्या–मार्ग छोड़ भुजबल से शत्रु को परास्त कर देश की आन–मान–शान बनाए रखने के लिए उठ खड़े होना। | 2 अंक |
| | (ख) | (ख) | (ख) | मृत्यु एक ही बार आती है अतः वीरों की तरह मरना शोभनीय है। | 2 अंक |
| | (ग) | (ग) | (ग) | मनुष्य स्वभाव से स्वतंत्र रहना चाहता है। स्वतंत्र रहने में ही उसे सुख, शांति और तृप्ति आदि मिलती है। अतः स्वतंत्रता उसका स्वभावगत गुण है। | 2 अंक |
| | (घ) | (घ) | (घ) | देश के लिए जीना और देश के लिए ही मरना कविता का मूल संदेश है। | 2 अंक |
| | (ड़) | (ड़) | (ड़) | देशवासियों को अत्याचार और अन्याय के आगे नहीं झुकना चाहिए। उन्हें शत्रु का डट कर मुकाबला करना चाहिए। स्वतंत्र रहने के लिए ये गुण अपेक्षित है आदि.........। | 2 अंक |

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| | | | | अथवा | |
| | अथवा (क) | 1 का अथवा (क) | 2(क) | काँधे धरी ......... अशर्फीलाल की।<br><br>पालकी ढोने वाले नंगे बदन, फेंटा कसे, पांव बेवाई फटे हैं तथा जीवन–भर माल ढोते–ढोते उनकी हालत खच्चर–सी हो गई है। | |
| | (ख) | (ख) | (ख) | पालकी ढोने वाले के तन की, मन की दुर्दशा हो चुकी है। वे पशु के समान, अभावग्रस्त किन्तु निरंतर पूंजीवादी व्यवस्था के अधीन रह कर गरीबी का जीवन जी रहे हैं। | |
| | (ग) | (ग) | (ग) | 'यह कर्ज पुश्तैनी .....' प्रस्तुत काव्य पंक्ति में समाज की सामन्तवादी तथा पूंजीवादी व्यवस्था पर चोट की गई है ।<br><br>यह व्यवस्था सर्वहारा वर्ग को गरीबी, दुख, आंसू, बंधुआ मजदूरी तथा कर्ज में डूबी बेसहारा जिंदगी के अतिरिक्त कुछ न दे पाई। | |
| | (घ) | (घ) | (घ) | बंधुआ मजदूरी में फंसे उस सर्वहारा वर्ग में जी–हजूरी करते–करते एक दिन अपने कर्त्तव्य का बोध हुआ ....... कि उन्हें भी ढंग से, स्वतंत्रता से जीना चाहिए। | |

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/ 1/2 | 29/ 1/3 | | |
| | (ड़) | (ड़) | (ड़) | 'लाला अशर्फीलाल' शोषक वर्ग सामन्तवाद, पूंजीवाद की ओर संकेत करता है तथा 'पालकी' ढोने वाले लोग बंधुआ मजदूर, सर्वहारा वर्ग व गरीबी की निम्न रेखा में जी रहे वर्ग की ओर संकेत करते हैं। | |
| 3 | 3 | 3 | 3 | निबंध का अंक–विभाजन इस प्रकार है : | |
| | | | | **भूमिका व उपसंहार** | 1/2+1/2= कुल 1 अंक |
| | | | | **विषय प्रतिपादन** | 3 अंक |
| | | | | **विषयानुरूप भाषा, शैली** | 1 अंक |
| | | | | | कुल 5 अंक |
| 4 | 4 | 4 | 4 | **पत्र का अंक–विभाजन इस प्रकार है :** | |
| | | | | **पत्र की आरंभिक औपचारिकताएं** | 1 अंक |
| | | | | **प्रभावशाली विषय प्रतिपादन–क्षमता** | 2 अंक |
| | | | | **पत्र प्राप्ति की औपचारिकता** | 1 अंक |
| | | | | **विषयानुरूप भाषा–शैली** | 1 अंक |
| | | | | | कुल 5 अंक |

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| 5 | 5 | 6 | 5 | अंक–विभाजन इस प्रकार है : | |
| | | | | (1) दूरदर्शन की भूमिका | 2 अंक |
| | | | | (2) समाचार वाचक के गुणों का उल्लेख | 3 अंक |
| | | | | | कुल 5 अंक |
| | | | | भूमिका : | |
| | | | | दूरदर्शन आज के संचार माध्यमों में सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम, सुनने के साथ–साथ देखना, देखने में मनोरंजन अधिक, इसमें धारावाहिक नाटक फिल्में नृत्यादि अनेक कार्यक्रम। समाचारों के साथ उनकी दृश्य प्रस्तुति विशेष रुचिकर एवं प्रभावी । | |
| | | | | (2) वाचक की भाषा में शुद्धता, मधुरता, सहजता, सुबोधता के साथ–साथ गतिमयता, सरलता एवं आम जनता की बोलचाल के शब्दों का प्रयोग। वाचक के चेहरे का हाव–भाव उसकी वेशभूषा का भी प्रभाव, दृश्यमूलक शब्दों जैसे 'झांकी', 'तस्वीर', 'झलक' आदि के प्रयोग विशेष। | |
| | | | | अथवा | |
| | 5 अथवा | 6 अथवा | 5 अथवा | इंटरनेट जहां सूचनाओं के आदान–प्रदान का बेहतरीन औजार है वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचार व गदंगी फैलाने का भी जरिया है। इंटरनेट पर पत्रकारिता के भी दो रूप हैं। | |

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा – मार्च, 2008
अंक योजना हिन्दी (ऐच्छिक)
कूटबंध सं0 29/1/1
29/1/2
29/1/3

कक्षा **XII**

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| | | | | पहला तो इंटरनेट का एक माध्यम व औजार के रूप में इस्तेमाल, अर्थात् खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग। दूसरा रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक तत्काल भेजने, समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है। | |
| 6 | 6(क) | 5(ग) | 6(ख) | रेडियो समाचार की भाषा सरस, निरक्षर लोगों के लिए भी बोधगम्य हो। अतः सरल एवं व्यावहारिक भाषा के साथ–साथ सुस्पष्ट भी होनी चाहिए। | 1 X 5 = 5 अंक |
| | 6(ख) | 5(क) | 6(क) | इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सुविधा का चौबीसों घण्टे उपलब्ध होना। पढ़ने, सुनने और देखने तीनों की ही सुविधा है। | |
| | 6(ग) | 5(ड.) | 6(घ) | विशेष लेखन से तात्पर्य – किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। अधिकतर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के अलावा रेडियो और टी.वी. चैनलों में विशेष लेखन होता है। | |
| | 6(घ) | 5(ख) | 6(ड.) | निम्नलिखित सिद्धांतों में से किन्हीं दो का उल्लेख अनिवार्य है –<br>(1) तथ्यों की शुद्धता (एक्युरेसी)<br>(2) वस्तुपरकता (ऑब्जेक्टीविटी)<br>(3) निष्पक्षता (फेयरनेस) | |

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
परीक्षा – मार्च, 2008
अंक योजना हिन्दी (ऐच्छिक)
कूटबंध सं0 29/1/1
29/1/2
29/1/3

कक्षा **XII**

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| | | | | (4) संतुलन (बैलेंस)<br>(5) स्रोत (सोर्सिंग–एट्रीब्यूशन) | |
| | 6(ङ.) | 5(घ) | 6(क) | फीचर – व्यावहारिक बातों अथवा घटनाओं की मनोरंजक प्रस्तुति फीचर कहलाती है – यह विशेष सत्य पर आधारित होता है, अतः पाठक एवं दर्शक की जिज्ञासा संवेदना, आशंका आदि को उत्पन्न करने में सहायक होता है। | |
| 7 | 7 | – | – | **किसी एक काव्यांश की व्याख्या अपेक्षित है :**<br><br>**छायावादी कवि – जयशंकर प्रसाद**<br>**रचना – 'देवसेना का गीत'**<br><br>यहां कवि एक रूपक के माध्यम से मनःस्थिति का विश्लेषण करता है। देवसेना कहती है– प्रलय स्वयं मेरे जीवन रथ पर सवार है भावनाओं एवं कष्टों की आंधी चल रही है फिर भी वह झंझावत प्रलय से लोहा लेती रही है। देवसेना प्रिय को संबोधित कर कहती है अब मेरी करुणा मुझे कमजोर बना रही है इस प्रेम को संभाल नहीं पाऊंगी। इसी प्रेम के कारण मैं अपनी लज्जा तक को गवां बैठी हूँ। | 4 अंक |

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| | 7 अथवा | – | – | अथवा<br><br>कवि –<br><br>(1) जायसी, 'पद्मावत', महाकाव्य के 'नागमती वियोग खंड' से उदधृत।<br><br>(2) पूस मास की सर्दी में वियोगिनी नागमती की विरह दशा का वर्णन।<br><br>(3) नागमती कहती है – चकवी रात को अपने प्रिय से बिछुड़ दिन में मिलन–सुख भोगती है, पर मैं कोयल की भांति रात–दिन वियोग–दुख भोगती हूँ। विरह रूपी यह बाज मेरे शरीर पर दृष्टि गड़ाए मेरी ओर देख रहा है। जीते जी मुझे खा रहा है – मेरे शरीर का रक्त बह रहा है, मांस गल गया है, हड्डियां शंख के समान सफेद हो गई हैं – हे प्रिय, मैं मरणावस्था में हूँ, आकर मुझे समेट लो।<br><br>(4) पूस मास की भयंकर सर्दी का विरहिणी के शरीर पर प्रभाव लक्षित, मन में प्रिय दर्शनों की अभिलाषा।<br>भाषा अवधी, छंद–चौपाई और दोहा, वियोग श्रृंगार रस, विरह–सैंचान में रूपक, अन्यत्र अनुप्रास। | |

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| | – | 7 | – | एक काव्यांश की व्याख्या अपेक्षित, अंक विभाजन इस प्रकार है<br>(1) कवि व कविता का नामोल्लेख<br>(2) पूर्वापर संबंध<br>(3) व्याख्या–मुख्य बिंदुओं की<br>(4) विशेष कथन | 1/2+1/2= कुल 1 अंक<br>1/2 अंक<br>2 अंक<br>1/2 अंक<br>कुल 4 अंक |
| | | | | **(1) कवि – जयशंकर प्रसाद 'देवसेना का गीत' 'स्कन्दगुप्त' से उदधृत**<br>**(2) जीवन की संध्या बेला में देवसेना अपने बीते यौवन का स्मरण करती है।**<br>**(3) स्कन्दगुप्त का प्रेम न पा सकने की उसके हृदय में पीड़ा व हूक उठती है – जीवन सुख, आशा, आकांक्षाओं से वह अब विदा लेती है – अभी तक भ्रम में रह कर उसने यौवन के सुनहले काल को खो दिया – वे निधियां उसने यों ही लुटा दीं, अब बचीं तो केवल वेदना।**<br>(4) 'मधुकरियों की भीख में' रूपक अलंकार, 'आंसू–से' में उपमा, भाषा में संगीतात्मकता का गुण, असफल प्रेमी हृदय की मार्मिक संवेदना की अभिव्यक्ति। | |

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| | | | | अथवा | |
| | – | 7<br>अथवा | – | (1) जायसी द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' से उद्धृत।<br><br>(2) नागमती की वियोग दशा का बारहमासे के अंतर्गत चित्रण।<br><br>(3) वियोगिनी के लिए फागुन मास की झकझोर देने वाली हवाएं उसकी विरहाग्नि को और तीव्र करती हैं। वह कहती है कि यदि उसके परदेसी पति को अपने वियोग का ऐसा ही असहनीय दुख देना है तो मैं विरहाग्नि में जल कर राख बनकर उनके हृदय से लग जाना चाहती हूँ। मेरे शरीर की उस राख को पवन उड़ा कर उस मार्ग पर बिछा दे जहां उसके पति के चरण पड़ने हों, जिससे वह स्पर्शजनित सुख पा सके।<br><br>(4) भाषा अवधी, चौपाई–दोहा छंद, वियोग की स्थिति में विरह की चरम सीमा। | |

| प्रश्न सं0 | प्रश्न पत्र गुच्छ सं. | | | उत्तर संकेत/मूल्य–बिन्दु | निर्धारित अंक विभाजन |
|---|---|---|---|---|---|
| | 29/1/1 | 29/1/2 | 29/1/3 | | |
| | – | – | 7 | एक काव्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या<br><br>(1) कवि – जयशंकर प्रसाद<br>(2) 'देवसेना का गीत' 'स्कन्दगुप्त' से उद्धृत<br><br>देवसेना असफल प्रेमिका, जीवन के सांध्यकाल में बीते यौवन की स्मृतियों में खोई।<br><br>(3) यौवनकाल में स्कन्दगुप्त ने भले ही देवसेना के प्रति उपेक्षा बरती पर संध्याकाल में उसने प्रणय निवेदन किया जिसे देवसेना ने अस्वीकारा – किन्तु अब स्कन्दगुप्त का प्रणय निवेदन उसे उनींदी अवस्था में सुनाए गए मधुर–मधुर विहाग जैसा लगता है – उसने अपने यौवनकाल की संचित प्रेम–पूंजी लोगों की नजर से बचा कर रखी, किंतु वह पूंजी यों ही उसने गवां दी – यह उसके जीवन की विडम्बना है।<br><br>(4) प्रतीकों के माध्यम से विगत जीवन की स्मृतियों का उल्लेख। | |